P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भरतपुर संभाग में पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास तथा सम्भावनाएं

कृष्ण कुमार शर्मा
प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
आत्माराम पी.जी. कॉलेज,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

आधुनिक समय में पर्यटन विश्व बाजार में एक महत्वपूर्ण उद्योग के रूप में उभरकर आ रहा है क्योंकि इस उद्योग में बहुत कम पूजी निवेश करके सबसे अधिक विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है।

वर्तमान में विश्व में सबसे ज्यादा लाभ कमाने वाला उद्योग पर्यटन उद्योग ही है। अतः विश्व का प्रत्येक देश अथवा क्षेत्र अधिक से अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से पर्यटन क्षेत्र के सहायक कारकों जैसे, प्राकृतिक तथा सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण का अत्यधिक उपयोग कर रहा है। जिससे भविष्य में उनके अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न हो गया है।

अतः पर्यटन उद्योग के कारण बढ़ते इस खतरे को कम करने के लिए पोषणीय पर्यटन एवं पारिस्थितिकी पर्यटन का विचार भूगोल वेत्ताओं तथा पर्यटन व पर्यावरण से जुड़ी विश्व की विभिन्न संस्थाओं के लिए आवश्यक है। ये सभी संस्थाएं पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन के विकास में अपना सहयोग प्रदान करें।

मुख्य शब्द : पर्यटन, विश्व बाजार, तकनीकि युग।

प्रस्तावना

वर्तमान तकनीकी युग में पर्यटन विश्व बाजार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उद्योग के रूप में उभरकर उपयोगी भूमिका निभा रहा है। जिसका एक प्रमुख कारण कम लागत और कम पूंजी निवेश है, जिसे कुछ ही समय में विकसित किया जा सकता है और अधिकतम लाभ और नवीन रोजगार विकसित करने में बहुत सहयोगी भी रहा है।

पर्यटन ने आज उद्योग का स्वरूप विकसित कर दिया है जिसका परिणाम यह हुआ कि आज पर्यटन विश्व में उद्योग की श्रेणी में शामिल हो चुका है। जिसको विभिन्न कारकों ने भी सहयोग दिया है और इसे पूर्ण रूप से अर्थात स्वतंत्र रूप में स्थापित करने में उपयोगी रहे है।

भरतपुर संभाग में भी ऐतिहासिक, प्राकृतिक एवं धार्मिक कारकों ने अधिक सहयोग दिया है जिसमें भरतपुर संभाग के प्राकृतिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्परूप ने भी भरपूर सहयोग प्रदान किया है लेकिन बढ़ते पर्यटन उद्योग एवं अनियोजित पर्यटन नीतियों के कारण यह एक समस्या भी बनता जा रहा है अतः प्रस्तुत अध्ययन में नियोजित एवं प्रबन्धकीय पर्यटन उद्योग की रूपरेख ध्यान में रखते हुए। प्रस्तुत शोध पत्र में ''भरतपुर संभाग में पोषणीय एवं पारिस्थितीकीय पर्यटन विकास तथा सम्भावनाओं'' पर एक सराहनीय प्रयास होगा जिसका अध्ययन करने का एक सकारात्मक प्रयास रहा है।

अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है जिसमें 4 जून 2005 में भरतपुर, सवाई माधोपुर, करौली, तथा धौलपुर जिलों को शामिल कर सातवें सम्भाग भरतपुर का गठन किया गया। भरतपुर संभाग राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। भरतपुर सम्भाग की स्थिति $25^0$45′ उत्तर से $27^0$17′ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तीय स्थिति $75^0$59′पूर्वी देशान्तर से $78^0$17′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य फैला हुआ है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 18122 वर्ग किमी. है भरतपुर सम्भाग की उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश राज्य से सीमाएं लगती है। (मानचित्र–1)

अध्ययन क्षेत्र में कुल जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार 6552987 है जिनमें 35,03,741 पुरूष तथा 3049246 स्त्रियां है यहां का लिंगानुपात 870 स्त्रियां प्रति हजार पुरूष है।

मानचित्र–1

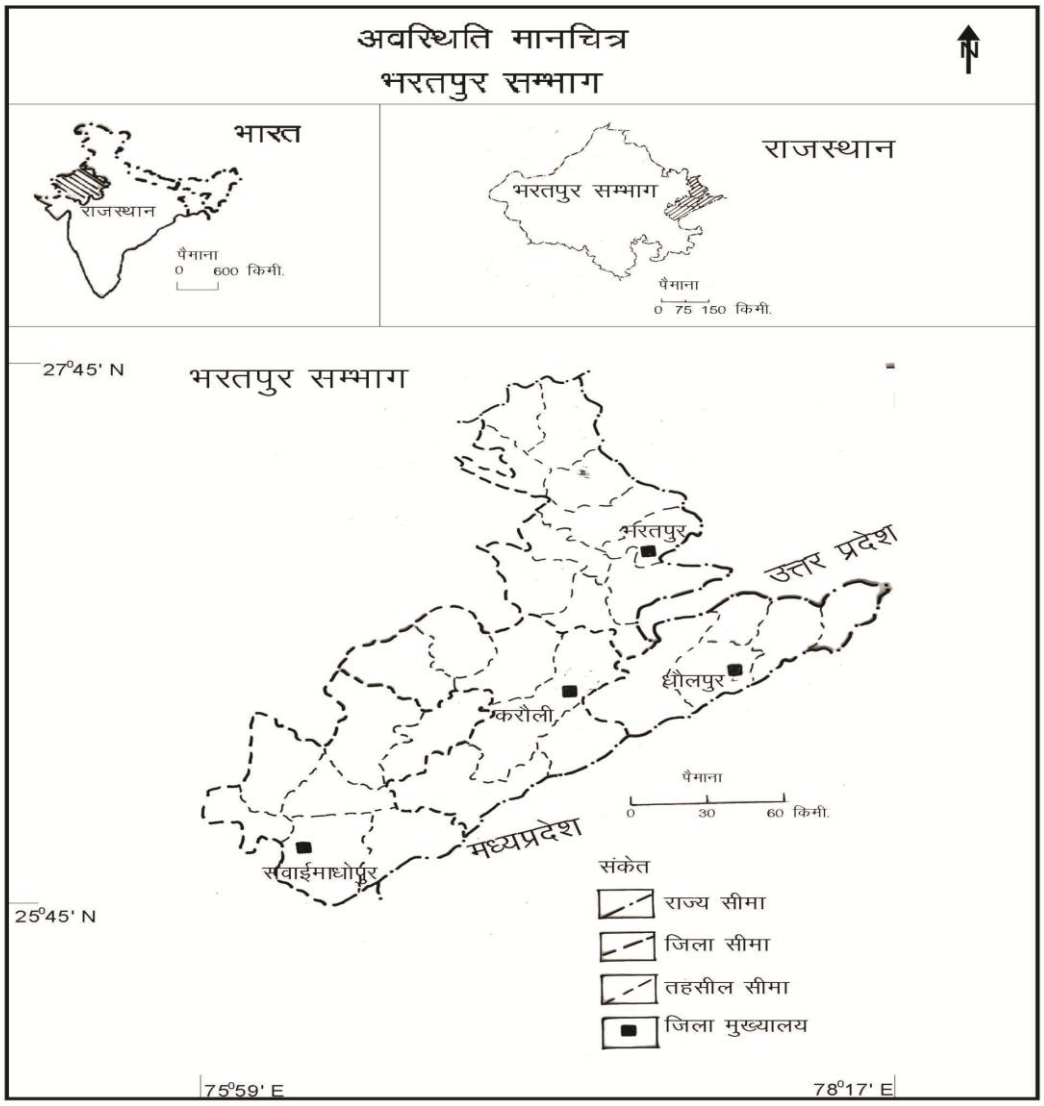

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न रहे हैः–

1. भरतपुर सम्भाग के पर्यटन उद्योग का अध्ययन करना।
2. पर्यटन विकास की सम्भावनाओं का आंकलन करना।
3. पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन का अभिज्ञान करना है।

परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययनकर्ता द्वारा निम्न परिकल्पनाओं को परीक्षण किया जाना हैः–

1. भरतपुर सम्भाग में पर्यटन विकास की विभिन्न सम्भावनाओं की जिज्ञासा रही है।
2. पर्यटन उद्योग प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र में उपयोगी है तथा यह अनुकूलता के अनुसार पनप रहा है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राप्त द्वितीय प्रकाशित एवं अप्रकाशित आंकड़ों का उपयोग किया गया है तथा अध्ययन की शुद्धता तथा स्पष्टता के लिए आरेखों, तालिकाओं, मानचित्र आदि की सहायता से अध्ययन को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसमें भारतीय जनगणना विभाग, जयपुर राज. तथा भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारत सरकार आदि के सहयोग से अध्ययन को पूर्णता में शामिल किया गया है।

पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन

वर्तमान समय में अध्ययन क्षेत्र भरतपुर संभाग में पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन की बहुत आवश्यकता है, जिसमें स्वेदशी एवं विदेशी पर्यटन आगमन का अध्ययन किया गया है जो इस प्रकार हैः–

स्वदेशी पर्यटक

अध्ययन क्षेत्र भरतपुर सम्भाग में सर्वाधिक पर्यटक वर्ष 2008 में आगमन किये जिनकी संख्या 3,85,402 थी जिनका प्रतिशत 26.21 रहा है। जबकि सबसे कम पर्यटक वर्ष 2011 में 1,45,452 रहे है। जिनका प्रतिशत 7.64 रहा है यह तालिका–1 व 2 द्वारा स्पष्ट है। वर्ष 2008 में स्वेदेशी पर्यटकों के आगमन का कारण आर्थिक–सामाजिक रहे है। जबकि वर्ष 2011 में पर्यटकों के आगमन की कमी में स्थानीय एवं सामाजिक कारकों ने प्रभावित किया है। (आरेख–1)

तालिका – 1
भरतपुर सम्भाग में पर्यटन विवरण – 2005–2011

क्र. सं.	वर्ष	स्वदेशी	विदेशी	कुल पर्यटक
1.	2005	2,12,936	53,650	2,66,588
2.	2006	3,21,530	54,773	3,76,303
3.	2007	3,29,578	58,813	3,88,391
4.	2008	3,85,402	66,596	4,51,998
5.	2009	3,21,080	62,862	3,83,942
6.	2010	1,90,662	72,760	2,63,422
7.	2011	1,45,452	44,552	1,90,004
8.	कुल	1906640	414006	23,20,646

स्रोतः–प्रगति प्रतिवेदन आर. टी. डी. सी. जयपुर (राज)

विदेशी पर्यटक

भरतपुर सम्भाग में विदेशी पर्यटकों के आगमन के अन्तर्गत सर्वाधिक आगमन वर्ष 2010 में रहा जिनकी संख्या 72,760 रही है जिसका प्रतिशत 17.58 रहा है यह तालिका संख्या 1 व 2 द्वारा स्पष्ट है इसी प्रकार सबसे कम विदेशी पर्यटकों का आगमन वर्ष 2011 में 44,552 रहा है। जिसका प्रतिशत 10.76 रहा है, यह तालिका संख्या 1 व 2 द्वारा स्पष्ट है। (आरेख–2)

इस प्रकार अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्ष 2011 में स्वदेशी एवं विदेशी पर्यटकों को आगम सबसे कम रहा है जिसका कारण विदेशी एवं स्वदेशी रहे जो संयुक्त रूप से प्रभाव डाला है। जिसमें जलवायु दशाओं की भी भूमिका भी रही है।

तालिका –2
भरतपुर सम्भाग में पर्यटन विवरण – 2005–2011
(प्रतिशत में)

क्र. सं.	वर्ष	स्वदेशी	विदेशी	कुल पर्यटक
1.	2005	11.17	12.96	11.48
2.	2006	16.86	13.23	16.22
3.	2007	17.28	14.21	16.74
4.	2008	20.21	16.08	19.48
5.	2009	16.84	15.18	16.54
6.	2010	10.00	17.58	11.36
7.	2011	7.64	10.76	8.18
	कुल	100	100	100

स्रोतः प्राप्त आंकड़ों द्वारा आंकलित (आर.टी.डी.सी. जयपुर)

आरेख–1

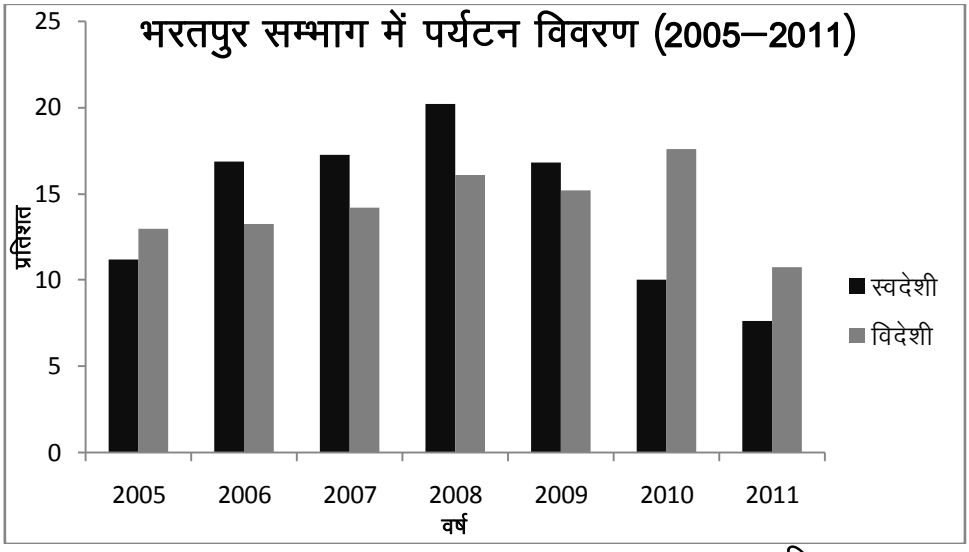

कुल पर्यटक

इस अध्ययन में स्वेदशी एवं विदेशी पर्यटकों को शामिल किया गया है जिसके अध्ययन के अन्तर्गत वर्ष 2008 में जिनकी संख्या 4,51,998 रही है जिनका कुल पर्यटन के अन्तर्गत 19.48 प्रतिशत रहा हैं वर्ष 2008 में स्वदेशी पर्यटकों की संख्या 3,85,402 रही थी जिनका प्रतिशत 85.27 रहा अर्थात इस वर्ष कुल पर्यटकों में यह सर्वाधिक थी इसी प्रकार विदेशी पर्यटकों की सर्वाधिक संख्या कुल पर्यटकों की सर्वाधिक संख्या कुल पर्यटकों में वर्ष 2010 में 27.62 रही है यह तालिका–3 द्वारा स्पष्ट है।

तालिका –3
भरतपुर सम्भाग में पर्यटन विवरण – 2005–2011
(प्रतिशत में)

क्र. सं.	वर्ष	स्वदेशी	विदेशी	कुल पर्यटक
1.	2005	97.87	20.13	100
2.	2006	85.44	14.56	100
3.	2007	84.86	15.14	100
4.	2008	85.27	14.73	100
5.	2009	83.63	16.37	100
6.	2010	72.38	27.62	100
7.	2011	76.55	23.45	100
	कुल	82.16	17.84	100

स्रोतः प्राप्त आंकड़ों द्वारा आंकलित (आर.टी.डी.सी. जयपुर)

अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि पर्यटन उद्योग स्थानीय एवं देश की परिस्थितियों के अनूकूल प्रभावित रहा है, अतः पोषणीय एवं पर्यावरणीय पर्यटन की आवश्यकता भरतपुर संभाग के लिए आवश्यक है।

पोषणीय पर्यटन

प्रस्तुत अध्ययन में पर्यटन के अध्ययन से यह तथ्य सामने आया है कि यहां पोषणीय पर्यटन की आवश्यकता है जिसके लिए ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कारणों का भी पोषण आवश्यक है और यहा पर्यटकों के आगमन के लिए आवश्यक सुविधाओं, मनोरंजन आदि के साथ प्राकृतिक पर्यटन स्थलों को पोषण देने की आवश्यकता है। जिससे भरतपुर सम्भाग के आर्थिक–सामाजिक जीवन स्तर में वृद्धि हो। साथ ही यहां प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि होगी तथा देश को विदेशी मुद्रा भण्डार में लाभ प्राप्त होगा अतः पोषणीय पर्यटन के लिए आवश्यक सुधार बहुत आवश्यक है।

आरेख–2

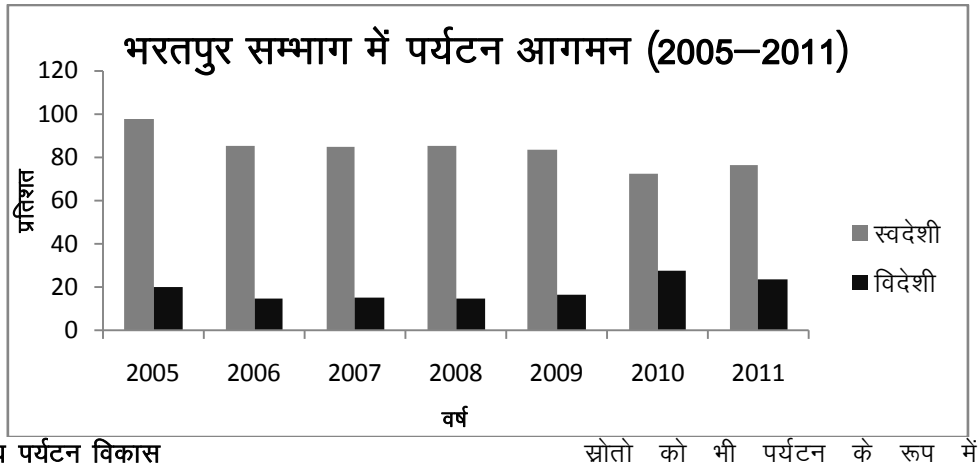

पारिस्थितीकीय पर्यटन विकास

पर्यटन उद्योग वर्तमान में एक नवीनतम उद्योग के रूप में उभर रहा है लेकिन यह आवश्यक है कि पर्यटन विकास में पारिस्थितीकीय तन्त्र में किसी भी प्रकार का ह्रास/अवनयन नहीं हो सके। इसी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए विभिन्न भूगोलविदों एवं पर्यावरणविदों ने इस अवधारणा को विकसित किया है जिससे किसी भी क्षेत्र में पारिस्थितिकीय संतुलन के साथ पोषणीय पर्यटन को गति प्रदान की जाये ऐसे विचार किसी भी भूगोलवेत्ता के होते है और वह इन्ही परिस्थितियों में पर्यटन विकास चाहता हे। अतः अध्ययन क्षेत्र पर्यटन स्थलों की समीपता के साथ पर्यटन स्थल मार्गों के मध्य भी स्थिति है। अतः यहां पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास की सम्भावनाओं को सुझाना भी बहुत आवश्यक जिससे सम्भाग के प्रत्येक जिले, तहसील, गांव एवं व्यक्ति को इसका लाभ मिले और ये सब इनका अनुसरण भी करें।

पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास की सम्भावनाएं

1. भरतपुर सम्भाग में जयपुर, दिल्ली, आगरा आगरा की परिवहन व्यवस्था सुदृढ़ है तथा यहां पर अनेक स्थल पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखते है।
2. इस क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन स्थल है जिनको ध्यान में रखते हुए पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन के विकास की सम्भावनाएं ।
3. भरतपुर सम्भाग में धार्मिक पर्यटन स्थलों की पहचान राष्ट्रीय स्तर की है जहां प्रतिवर्ष 70 से 85 प्रतिशत स्वदेशी पर्यटकों का आगमन होता है अतः इस आधार पर भी पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय कोष पर्यटन विकास की सम्भावना स्पष्ट होती है।
4. भरतपुर सम्भाग में राजस्थान की मुख्य नदियों में चम्बल नदी प्रवाहित होती है तथा यहां सतही जल स्रोतो को भी पर्यटन के रूप में पोषण की आवश्यकता है ताकि यहां पारिस्थितिकीय पर्यटन को बढ़ावा प्राप्त होगा।

इस प्रकार अध्ययन से स्पष्ट है कि भरतपुर सम्भाग में पोषणीय एवं पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास की सम्भावनाएं भरपूर है लेकिन इसके लिए पर्यटन प्रबंध, पर्यटन नियम, जनजागरूकता, सुरक्षा, परिवहन सुविधा, आवास सुविधाओं, प्रदूषण नियन्त्रण, कचरा प्रबन्धन, सफाई व्यवस्था, तथा स्वास्थ्य सुविधाओं सहित अनेक सुविधाओं की आवश्यकता है जिससे अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास को सन्तुलित एवं पोषणीय अवस्था में लाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

भल्ला एल. आर. (2014) राजस्थान का भूगोल, कुलदीप प्रकाशन जयपुर।

व्यास, राजेश कुमार (2010) पर्यटन उद्भव एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।

गुप्ता मोहन लाल (2011) भरतपुर सम्भाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, 2011।

जिला सांख्यिकीय रूपरेखा (2011) जिला सवाई माधोपुर, करौली, भरतपुर व धौलपुर।

शर्मा कालूराम (2011) राजस्थान का इतिहास पंचशील प्रकाशन जयपुर (राज.)।

माहेश्वरी, दीपक (2006) 'राजस्थान एक अध्ययन' प्रतियोगिता साहित्य, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा।

नेगी, जगमोहन (1986) 'पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त' गीतांजली पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।